अनुक्रमणिका

पुस्तक के बारे में

नवग्रहों में शनि की महिमा एवं शनि का महत्त्व सबसे अलग है, विलक्षण है। शनि को लेकर प्राचीन ग्रंथों में बृहत्पाराशर, बृहत्जातक, होराशास्त्र, मानसागरी, जातकाभरण, जातकपरिजात, होरासार, फलदीपिका, चमत्कार चिन्तामणि, इत्यादि ग्रन्थों में भरपूर सामग्री बिखरी पड़ी है। आज भी अकेले शनि को लेकर बहुत सी पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं। सबसे पहले महीपति नामक कवि ने **'शनिमहात्म्य'** नामक पुस्तक मराठी में लिखी शनि को लेकर मेरे परमप्रिय मित्र एवं अनुयायी स्व. श्री एल. आर चौधरी ने 'Saturn a Friend or foe' नामक पुस्तक लिखी। उसी तर्ज पर स्व. पं. श्यामसुन्दर वत्स ने **'शनि शत्रु नहीं मित्र'** नामक पुस्तक लिखी। स्व. एच.एन. काटवे ने **'शनि विचार'** नामक पुस्तक लिखी। श्रीमती मृदुला त्रिवेदी ने **'शनि शमन'** लिखा। **शनि की साढे साती**, डॉ. विभाश्री ने **'शनिपुराण'** एवं **शनि महात्म्य** लिखा और न जाने कितनी किताबें अकेले शनि पर लिखी गई हैं, जिनकी गिनती कर पाना अपने आप में एक शोधपूर्ण कार्य होगा। ईस्वी सन् 2004 माघ का ठिठुरता महीना था। सुबह के दस बजे थे। मैं पूजा में बैठा था कि अचानक टेलीफोन की घंटी घनघना उठी। बहुत कम लोग होते हैं जो मुझे घर में पूजा के समय टेलीफोन करने का साहस करते है। यह फोन डायमण्ड पॉकेट बुक्स के निर्देशक एवं स्वामी श्री नरेन्द्र जी वर्मा का था। उन्होंने प्रार्थना भरे शब्दों में निवेदन किया कि आप शनि पर फौरन एक पुस्तक लीखिए जो बाजार में उपलब्ध पुस्तकों से हट कर हो, प्रमाणिक हो, नवीन जानकारी से परिपूर्ण हो तथा रोचक हो। उन्होंने विस्तार से बात करते हुए बताया कि शनि का हौवा चारों ओर फैला हुआ है। शनि को लेकर आम जनता को डराया जा रहा है। साढे साती और शनि की ढैया के नाम से एक हौवा खड़ा कर दिया गया है। जगह-जगह शनि-मन्दिर खुल रहे हैं। आजकल बड़े शहरों में कार-पार्किंग या सार्वजनिक विचरण स्थल पर, शनिवार के दिन हर बीस-तीस कदम पर, शनि प्रतिमा पड़ी मिलेगी। क्या उन प्रतिमाओं पर पैसा फेकने से शनि प्रसन्न या शान्त हो जाता है। शनि के वास्तविक उपचार (Remedy) पर कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है? इसलिए भारत एवं विदेशों के लाखों पाठक आपकी ओजस्वी लेखनी से शनि के बारे में नई जानकारियां प्राप्त करना चाहते हैं।

मैंने प्रबुद्ध पाठकों की इस चुनौती को ईश्वर का आदेश समझकर स्वीकार किया और सबसे पहले वैदिक साहित्य में शनि को ढूंढा। वैदिक साहित्य में शनि का विशेष अस्तित्व (वजूद) नहीं मिला परन्तु परवर्ती पौराणिक साहित्य में शनि नवग्रहों में से सबसे प्रमुख, सबसे प्रधान ग्रह बन कर उभरे। शनि के बारे में जितने किस्से, किवदन्तियां, कहानियां प्रचलित हैं, उतने दृष्टान्त अन्य किसी भी ग्रह के बारे में प्रचलित व प्रसारित नहीं है। कई बार ऐतिहासिक कसौटियों, तार्किक पहलूओं एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर शनि के बारे में प्रचलित किस्सें सच नहीं जान पड़ते। फिर भी हिन्दू आस्थाओं के प्रतीक पुराणों को एकदम कपोल-कल्पित नहीं माना जा सकता। पुराण इतिहास का ही एक स्वरूप है। पुराण अतिरंजित तो हो सकता है पर मिथ्या नहीं। शनि की सच्चाई खुले हृदय से सर्वप्रथम ज्योतिष शास्त्र ने स्वीकार की। ज्योतिष शास्त्र में पौराणिक एवं आकाशीय (वास्तविक) शनि का मिला-जुला स्वरूप स्पष्टत: प्रतिबिम्बित होता है। महर्षि पाराशर, आचार्य वराहमिहिर, गुणाकर, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ, महादेव, ढुंढिराज, मन्त्रेश्वर जयदेव, पूंजराज, विलिएम लिलि, एलिन लिओं, सर्वार्थ चिन्तामणि, कालिदास, विद्यारण्य ने विविध आप्तवाक्यों से शनि के प्रभाव को प्रतिलक्षित किया है। इन सभी उद्धरणों के साथ-साथ मैंने मेरे निजी अनुभव के खजानें को भी आम व खास पाठकों के लिए परोसा है। मुझे विश्वास है कि शनि की इस सच्चाई को प्रबुद्ध पाठक गण एवं वैज्ञानिक मन-मस्तिष्क वाले प्रत्येक बुद्धिजीवी खुले हृदय से स्वीकार करेंगे।
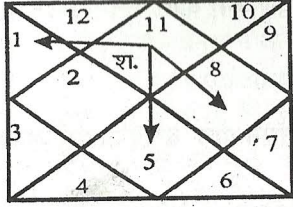
होगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। ऐसे जातक के शत्रुओं का नाश दैवी-विपत्तियों से स्वत: ही हो जाता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि तृतीय स्थान (मेष राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः छोटे भाइयों से कम बनेगी पर समाज के अन्य लोगों से अच्छे संबंध होंगे। पत्नी के साथ कम बनेगी। जातक राजनीति में रुचि लेगा। सरकार में प्रभाव रहेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 12/श्लोक 2 के अनुसार–**व्ययेश मदने लग्ने जायासौख्य भवेन्नहि'** व्ययेश यदि लग्न में हो तो जातक को पत्नी का सुख नहीं होगा। विद्या अधूरी छूट जाएगी। विवाह विलम्ब से होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। उसका भाग्योदय होगा, पराक्रम बढ़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को दुष्टमति एवं चित्त भ्रमित स्वभाव का बनाएगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति लग्न में होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। पत्नी सुन्दर होगी परन्तु दुर्घटना से अंग-भंग होने का खतरा बना रहेगा। जातक का सही उन्नति पिता की मृत्यु के बाद होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक का दाम्पत्य जीवन नीरस होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध हो तो जातक को संतति सुख श्रेष्ठ मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति हो या बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक तत्वज्ञानी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र हो तो जातक करोड़पति होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु यहां जातक को भौतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति देगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को कीर्तिवन्त बनाएगा।

उपाय– 1. शनि का शुभ फल अधिक माया में प्राप्त करने के लिए नीलमयुक्त शनि का लॉकेट संख्या 165 पहनें।
2. सवा पांच कैरट नीलम की अंगूठी पहनें।

मीनलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
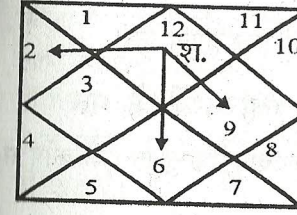
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। यहां प्रथम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में है। ऐसा जातक जिद्दी व हठी स्वभाव का होता है। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय-धंधे में लाभ होता है परन्तु जातक कमाई का बहुत अधिक हिस्सा फालतू कार्यों में खर्च कर देता है। गृहस्थ सुख भी संदेहास्पद रहेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृष राशि), सप्तम भाव (कन्या राशि) एवं दशम स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा पर कुख्यात होगा। पत्नी से कम बनेगी। सरकारी नौकरी से लाभ कमजोर रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक अपनी उम्र (वय) से अधिक दिखता है। पत्नी व जातक के मध्य उम्र का अन्तराल अधिक होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य अपनी मित्र राशि में हो तो शनि अपनी शत्रुराशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति विस्फोटक हैं। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। जातक की वाणी स्खलित होती रहेगी। चरित्र विरोधाभासी होगा।
2. **शनि+चंद्रमा**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को अंग्रेजी शिक्षा एवं विदेशी भाषा में दक्ष बनाएगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को धनी व भाग्यशाली तो बनाएगा पर जातक लड़ाकू होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक विद्यावान होगा।
5. **शनि+बृहस्पति**–शनि के साथ बृहस्पति **'हंस योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं सघन जनसम्पर्क वाला होगा। जातक शहर या गांव का मुखिया होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को क्रोधी, हठी, दंभी एवं खुराफाती दिमाग वाला बनाएगा।

उपाय– 1. शनि यंत्र का पूजन करे।
2. शनि शान्ति का वैदिक प्रयोग करे।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
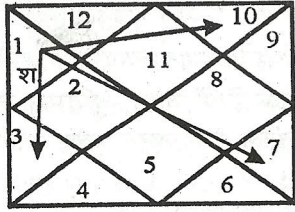
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां तृतीय स्थान में नीच का होगा। मेष राशि के अंशों पर शनि परम नीच का होता है। जातक का अपने भाई-बहनों से संबंध ठीक नहीं होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। ऐसा जातक दूरदर्शी नहीं होता। तत्काल व तुरन्त लाभ के चक्कर में आगे का काम बिगाड़ देता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि), भाग्यभवन (तुला राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक की विद्या अधूरी छूट जाये, भाग्य तो उत्तम होगा पर पिता की सम्पत्ति को जातक ठुकरा देगा। जातक बड़े-बड़े खर्चे करेगा। जिससे ऋणग्रस्त हो जाएगा।

निशानी–जातक अपनी नारी व दीक्षित बृहस्पति से भी द्वेष रखने वाला होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा ज्यादा शुभ फल नहीं दे पाएगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र–**शनि के साथ चंद्रमा जातक को परिजनों से लाभ देगा। परंतु जातक को छोटे भाई का सुख नहीं होगा।
2. **शनि+सूर्य–**यहां दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। सूर्य यहां उच्च का, शनि नीच का होकर **'नीचभंग राजयोग'** बनाएगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे छोटे-बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं रहेगा। जाति के अलावा अन्य लोगों में बड़ी कीर्ति होगी।
3. **शनि+मंगल–**शनि के साथ मंगल **'नीचभंग राजयोग'** कराएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। प्रभावशाली होगा।
4. **शनि+बुध–**शनि के साथ बुध जातक को भाई-बहन दोनों का सुख देगा। जातक बुद्धिजीवी होगा।
5. **शनि+बृहस्पति–**शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक कठोर परिश्रमी व पुरुषार्थी होगा। जातक को पुरुषार्थ का फल मिलेगा।
6. **शनि+शुक्र–**शनि के साथ शुक्र जातक को भाई-बहनों का सुख देगा। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
7. **शनि+राहु–**शनि के साथ राहु पराक्रम भंग करेगा।

8. **शनि+केतु–**शनि के साथ केतु जातक को मित्रों से परेशानी दिलाएगा।

उपाय– 1. उपाय संख्या 98 से 113 में से कोई पांच उपाय करें।
2. शनि शान्ति का वैदिक प्रयोग करें।

मीनलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
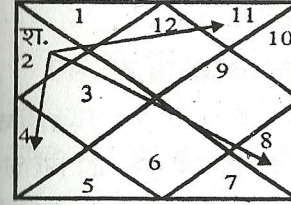
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश बृहस्पति का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। शनि यहां तृतीय स्थान में वृष (मित्र) राशि में होगा। जातक की भाई-बहनों व कुटम्बियों से बनेगी नहीं। पाराशर ने इस शनि को 'भ्रातृसौख्यविवर्जित' कहा है। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। भाग्योदय हेतु संघर्ष रहेगा। जातक परदेश (विदेश) जाकर कमा सकता है। विदेशी भाषा पढ़ने से पराक्रम बढ़ेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम स्थान (कर्क राशि), भाग्य स्थान (वृश्चिक राशि) एवं द्वादश स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: विद्या में बाधा व संतति विलम्ब से हो।

निशानी–जातक दूसरों की तरक्की सम्पन्नता देखकर चिढ़ेगा। पर छिन्द्रान्वेषक व द्वेषी होगा। जातक डरपोक होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य–**यहां दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। सूर्य अपनी शत्रु राशि में हो तो शनि मित्रराशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की यह युति पराक्रम को भंग करेगी। जातक को छोटे व बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं होगा। मित्र अच्छे व सच्चे न होकर दगाबाज होंगे।
2. **शनि+चंद्रमा–**शनि के साथ चंद्रमा उच्च का होने से जातक पराक्रमी होगा। कुटुम्ब व परिवार का सुख होगा पर छोटे भाई का सुख नहीं होगा।
3. **शनि+मंगल–**शनि के साथ मंगल भाईयों का सुख देगा। मित्र भाग्यशाली होगा।
4. **शनि+बुध–**शनि के साथ बुध होने से भाई-बहन दोनों का सुख होगा। भाई-बहन पढ़े-लिखे होंगे।
5. **शनि+बृहस्पति–**शनि के साथ बृहस्पति जातक को राजसुख देगा। जातक पराक्रमी होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दसवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्ययभाव (वृषराशि), चतुर्थभाव (कन्याराशि) एवं सप्तमभाव (धनुराशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक पूर्ण सुखी होगा। विवाह के बाद किस्मत खुलेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा परंतु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक का राजनीति में प्रभाव रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा।
4. **शनि+बुध**–**'कुलदीपकयोग'** के कारण जातक परिवार का नाम रोशन करेगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
5. **शनि+बृहस्पति**–**'हंसयोग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक महाधनी होगा। उसके पास अनेक वाहन होगे।
6. **शनि+शुक्र**–**'मालव्ययोग'** के कारण जातक के पास अनेक वाहन होंगे। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **शनि+राहु**–राजनीति में धोखा मिलेगा।
8. **शनि+केतु**–राजनीति यंत्र में गुप्त शत्रु आपके लिए सक्रिय रहेगे।

उपाय– 1. नीलमयुक्त **'शनियंत्र'** धारण करें।
2. कीडिनगरा साधन करें।
3. पन्ना + नीलम **'बीसायंत्र'** में धारण करें।

कर्कलग्न में शनि की स्थिति दशम भाव में
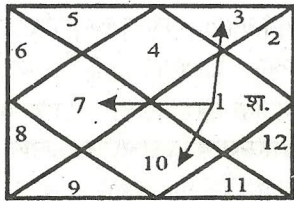
कर्कलग्न में मेष का शनि दशम भाव में नीच का होगा। इस शनि की दृष्टि द्वादश स्थान, चतुर्थ स्थान एवं सप्तम स्थान पर है। ऐसा जातक अच्छा कमाता है एवं राज दरबार में, सरकारी क्षेत्र में उसे समय-समय पर सहयोग मिलता रहता है।

सप्तमेश शनि केन्द्र में होने एवं सप्तमभाव पर पूर्ण दृष्टि होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखी परन्तु पत्नी व ससुराल पक्ष जातक के कक्षा-स्तर में निम्न होंगे। विवाह देर में होगा।

अष्टमेश होकर शनि दसवें भाव में होने में जातक को कमाने के लिए खूब मेहनत करनी पड़ेगी। शनि की दृष्टि बारहवें भाव पर होने के कारण जातक बेकार बहुत खर्चे होंगे। यात्राओं एवं परदेश गमन पर रुपया खर्च होगा।

शनि की चौथे भाव पर दृष्टि है जो कि उसकी उच्च राशि है। ऐसे जातक को मातृ-सुख उत्तम होता है एवं रहने का मकान उत्तम एवं वाहन सुख भी उत्तम होता है।

शनि का अन्य ग्रहों के साथ संबंध–

1. **शनि + सूर्य**–शनि के साथ सूर्य यहां **'नीचभंगराजयोग'** बनाएगा। जातक महाधनी होगा। पिता की मृत्यु के बाद किस्मत चमकेगी।
2. **शनि + चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा **'विषयोग'** बनाएगा। नौकरी में बाधा पर बहुधंधी व्यापार में लाभ होगा।
3. **शनि + मंगल**–यदि शनि के साथ मंगल हो तो **'नीचभंगराजयोग'** बनता है। यदि मंगल यहां मकर राशि में हो तो सप्तमेश व दशमेश मंगल शनि में परस्पर परिवर्तन योग बनने से इस कारण **'पद्मसिंहासनयोग'** भी बनता है।
4. **शनि + बुध**–शनि के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा पर सगे भाई-बहनों में कम पटेगी।
5. **शनि + बृहस्पति**–शनि के साथ बृहस्पति जातक भाग्यशाली बनाएगा पर भाग्योदय धीमी गति से होगा। जातक राजनीति में विशेष दक्ष होगा।
6. **शनि + शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन एवं भवन का सुख देगा पर नौकर षड्यंत्रकारी होगे। पुराना वाहन दुःख देगा।
7. **शनि + राहु**–शनि के साथ राहु नौकरी में बाधा एवं नये कारोबार में रूकावट देगा।
8. **शनि + केतु**–शनि के साथ केतु जातक को विशेष महत्वाकांक्षी एवं धर्मध्वज बनाएगा।

उपाय– 1. उपाय संख्या 98 से 113 के मध्य कोई पांच उपाय करें।
2. ऋषि पिप्पलादकृत शनि स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
3. नराकार शनियंत्र का पूजन करें।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में
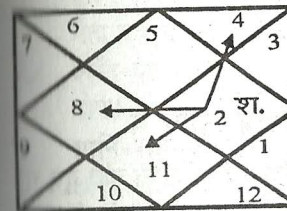
सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां दशम स्थान में शनि वृष (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक प्रभावशाली होगा। कोर्ट-कचहरी, राज-दरबार में जातक की तूती बोलेगी। जातक सिद्धान्तवादी होगा एवं हरेक से कुछ न कुछ पंगा होने की कोशिश करेगा।

51. यदि शनि की साढ़े साती के दौरान व्यक्ति किसी भी प्रकार का नशा नहीं करता तो शनि के दुष्प्रभाव आधे से अधिक स्वत: कम हो जाते हैं। क्योंकि शनि के विषय में पहले ही बताया जा चुका है, वह मति भ्रम का विशेष कारक है और मति भ्रम कराने वाले भौतिक पदार्थों में अफीम, चरस, गांजा, तम्बाकू, भांग या तम्बाकुओं से निर्मित सिगरेट, शराब या अन्य नशा देने वाले पदार्थ होते है। अत: शनि के बिगड़े हुए होने पर जातक को किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहना चाहिए। इसी प्रकार शनि निरीह और काले रंग के छोटे जीवों का भी प्रतिनिधि कारक ग्रह है, साथ ही वह जनसाधारण में घृणित पदार्थों का भी कारक है। अत: जातक को चाहिए कि वह किसी भी प्रकार का मांस या मछली आदि का न तो सेवन करें और न ही मांसाहारियों के साथ रहें। भौतिक सुखों की निकृष्ट शैली के अंतर्गत दुष्कृत्यों की शृंखला बनती है, जैसे-जुआ, सट्टा, शराब, शबाब सुन्दरी और अन्त में जातक के लिए सर्वत्र नाश ही नाश। जन्मकुण्डली में शनि के साथ अन्य पापी ग्रह अशुभ स्थान पर इस प्रकार का संबध बना है, तो जातक को उक्त प्रकार के अनैतिक भटकाव की ओर आकृष्ट करते हैं और विशेषकर साढ़ेसाती के दौरान शनि के प्रभाव का जातक के मन पर काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव और द्वेष नामक सात विकार हावी हो जाते हैं, जिसके कारण जातक का मन और मस्तिष्क इस प्रकार के हानिकारक सुखों की ओर अनावश्यक भागने लगता है और अधिक दुखी होकर चला जाता है। अत: जातक को चाहिए कि इन चीजों से बचने का यत्न करें।

52. झूठ, छल, कपट, मक्कारी, धोखा आदि का कारक ग्रह भी शनि है, अत: जातक को चाहिए कि वह किसी प्रकार झूठी गवाही से बचे, अपनी ओर से किसी के साथ छल, कपट न करे और न ही ऐसा करने वालों का साथ दें।

53. शनि अंधेरे, सूनेपन, खण्डहर आदि स्थानों का प्रतिनिधित्व करता है, अत: जातक को अकेले और एकान्त में रहने से बचना चाहिए। क्योंकि ऐसी दशा में मनविकारों में वृद्धि की संभावना रहती है, इसके स्थान पर जातक को भरे-पूरे परिवार के बीच या सार्वजनिक स्थान पर अधिक समय गुजारना चाहिए।

54. शनि कलंक भी लगाता है और साढ़े साती के दौरान तो यह संभावना प्रबल हो जाती है, अत: जातक को किसी स्त्री (स्त्री को पुरूष से) एकांत या अकेले में किसी प्रकार का वार्तालाप नहीं करना चाहिए, बेमौसम, बेसमय और बेवजह किसी के घर नहीं जाना चाहिए, किसी संदेहास्पद स्थान पर नहीं जाना चाहिए। ऐसे स्थान पर भी नहीं जाना चाहिए जिसके प्रति आसपास का जन साधारण विपरीत विचार रखता हो।

55. शनि पिता के परिवार के पिता से बड़े सदस्यों का कारक होता है, जन्मकुण्डली में शनि से दादा की स्थिति का ज्ञान होता है, अत: जातक को चाहिए कि वह ताया दादा या इनके समकक्ष लोगों का सम्मान करे, उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें, उन्हें प्रसन्न रखने का यत्न करें इससे शनि के कोप शांत होकर जातक को सुख पहुंचाते हैं। मृतक पूर्वजों का विधिवत् श्राद्ध आदि करना चाहिए।

56. जिन लोगों की जन्मकुण्डली में शनि अपनी उच्च राशि में हो तो उसे शनि की चीजों का दान नहीं करना चाहिए, इसके विपरीत जिनकी कुण्डली में शनि नीच राशि में हो उन्हें शनि की चीजों का दान नहीं करना चाहिए।

विशेष–शनि का मौलिक कारकत्व यह है कि वह जातक को मतिभ्रम कर, उसे कष्ट और हानियां पंहुचाकर, उसके भौतिक सुख-साधनों में कमी लाकर मृग-मरीचिका में भटकाकर, यहां तक कि सभी ओर से दु:ख ही दु:ख देकर जातक को इस संसार के माया मोह से मुक्त कराता है, जिसके कारण जातक का परलोक सिधार जाता है।

57. यदि किसी को शनि दृष्टि दोष है तो उसे सदा शनिदेव की मूर्ति या यंत्र के आगे तेल का दिया जलाकर एक माला शनिमंत्र की जाप करके शनिदेव से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे शनिदेव! आपकी दृष्टि का प्रकोप जो मेरे ऊपर है उस प्रकोप की शांति कीजिये और आपके प्रकोप की शांति के लिए आपकी दृष्टि दोष की शांति के लिए हमारा यह मंत्र पाठ स्वीकार करें। ऐसे व्यक्ति शनि मंदिर अवश्य जाएं। वहां शनिदेव की मूर्ति पर तेल अवश्य चढावें।

58. किसी का शनि वक्री व अस्त है उसे शनिवार के दिन किसी गरीब को भरपेट भोजन कराना चाहिए शनीचरी अमावस्या को अधिक से अधिक गरीबों को भोजन करना चाहिए या किसी न किसी रुप में गरीब की मदद करनी चाहिए।

59. शनिदेव की एक लोहे की प्रतिमा बनवाएं। यह प्रतिमा शनि के नक्षत्र में ही तैयार कराएं। शनि के तीन नक्षत्र हैं उत्तराभाद्रपद, पुष्य एवं अनुराधा नक्षत्र। बैल्डिंग बाले को इन नक्षत्रों वाले दिन में ही विशेष आर्डर देकर शनि प्रतिमा तैयार करा लें या मूर्तिकार से अष्ट धातु की शनि प्रतिमा छोटी-सी चार इंच की बनवा लें फिर इन्हीं तीनों में से किसी एक नक्षत्र में उसकी विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा ही पुरोहित को बुलाकर करें एवं मूर्ति शनि मन्दिर में चढ़ाएं।

विशेष–एक बात ध्यान में रखें कि शनि की मूर्ति, प्रतिमा, फोटों घर, दुकान में न रखे। इससे शनि बिना बुलाएं ही घर पर आ जाएंगे शनि जब भगवान शिव के घर प्रेमपूर्वक जाकर, दृष्टिपात से गणपति का सिरच्छेद कर सकते है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी शनि को घर में नहीं आने दिया। उसे कोकिलवन में भेज दिया। श्रीकृष्ण तो सर्वसमर्थ थे। अत: साधारण मानव के लिए शनिदेव को दूर से ही नमस्कार करना श्रेष्ठ रहता है।